



नेपाल

वह डॉक्टर, जो आँखों की सर्जरी पहाड़ों तक ले गया

नेपाल के पहाड़ों का एक गरीब लड़का आँखों का सर्जन बना। उसने नज़र को इतना सस्ता बनाया कि वह गरीबों तक पहुँचे।

कहाँ काठमांडू

कौन डॉ. संदुक रुइत, नेपाल के एक नेत्र-सर्जन

कब 1980 से 2012

4 मिनट में पढ़ें

कहानी

संदुक रुइत का जन्म नेपाल के एक दूर-दराज़ पहाड़ी इलाक़े में हुआ। वह इतना गरीब था कि सबसे पास का स्कूल कई दिन पैदल चलकर पहुँचने की दूरी पर था। वहाँ कोई स्वास्थ्य चौकी भी नहीं थी।

17 साल की उम्र में उनकी बड़ी बहन टीबी से चल बसीं। टीबी फेफ़ड़ों की एक बीमारी है। उनकी मौत ने उन्हें डॉक्टर बनने की ठान दिलाई। एक छात्रवृत्ति उन्हें भारत के मेडिकल कॉलेज ले गई। फिर वे घर लौटे और सरकारी स्वास्थ्य अधिकारी बने।

आँखों पर बादल

नेपाल में बहुत-से बुजुर्ग मोतियाबिंद से अंधे हो रहे थे। मोतियाबिंद आँख में धुंधला धब्बा होता है। वह रोशनी को रोक देता है। ऑपरेशन से वह ठीक हो सकता है। पर पहाड़ों के लोगों के पास सर्जन तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था।

1980 में रुइत ने अंधेपन पर एक सर्वे में काम किया। वहाँ उनकी मुलाक़ात ऑस्ट्रेलिया के आँखों के डॉक्टर फ्रेड हॉलोज़ से हुई। बाद में ऑस्ट्रेलिया में हॉलोज़ ने उन्हें एक नया तरीक़ा सिखाया। सर्जन धुंधला लेंस निकालता है और उसकी जगह एक नन्हा प्लास्टिक का लेंस लगा देता है। रुइत यह तरीक़ा 1988 में नेपाल लाए।

नेपाल के कुछ आँखों के सर्जनों को यह बदलाव पसंद नहीं आया। रुइत ने उन्हें धीरज से सिखाया। धीरे-धीरे कुछ मान गए।

फिर वे यह काम गाँवों तक ले गए। वे अपने दल के साथ पैदल दूर-दराज़ के क़स्बों तक गए और नेत्र शिविर लगाए। सैकड़ों लोगों का इलाज वहीं के वहीं हुआ। शिविर सादे होते थे, इसलिए उन्होंने काम को साफ़ और सटीक रखने के तरीक़े खोजे। उन्होंने बिना टाँकों के ऑपरेशन करने का तरीक़ा भी खोजा। ऑपरेशन तेज़ हो गया, और लोग जल्दी ठीक होने लगे।

अगर आप इसे नेपाल में कर सकते हैं, तो इसे दुनिया में कहीं भी किया जा सकता है।

संदुक रुइत, रॉयटर्स से, 2012

\$4

2012 में तिलगंगा के एक
लेंस की कीमत

\$100+

पहले आयातित लेंस की
कीमत

125,000

2012 तक रुइत के अपने
ऑपरेशन

चार डॉलर का लेंस

विदेश से आने वाला लेंस 100 डॉलर से ज़्यादा का पड़ता था। कम ही मरीज़ इतना दे सकते थे। 1994 में रुइत ने काठमांडू में तिलगंगा नेत्र केंद्र खोला। वह अपने लेंस खुद बनाता है। 2012 तक एक लेंस की लागत लगभग 4 डॉलर थी।

केंद्र दूसरे देशों को लेंस बेचता है। उस आमदनी से केंद्र के काम का खर्च निकलता है। मरीज़ जितना दे सकते हैं, उतना देते हैं। गरीब कुछ नहीं देते।

रुइत दूसरों को भी सिखाते हैं। 2006 तक एशिया भर के 500 से ज़्यादा सर्जन उनके तरीके सीख चुके थे। जून 2006 में उन्होंने और उनके दल ने उत्तर कोरिया में छह दिन में 1,000 से ज़्यादा मरीज़ों का इलाज किया।

पूर्वी नेपाल के एक शिविर में एक महिला ने पहली बार अपने चार साल के बेटे को देखा। उसके जन्म के समय वह अंधी थी। रुइत बताते हैं कि उसने बच्चे को झट से उठा लिया और खुशी से रो पड़ी।

2006 में रुइत को रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिला। यह फ़िलीपींस में एशिया में दूसरों की सेवा करने वालों को दिया जाता है।

कब क्या हुआ

- **1980** रुइत अंधेपन के सर्वे में काम करते हैं और फ्रेड हॉलोज़ से मिलते हैं।
- **1988** वे नेपाल में लेंस वाली सर्जरी लाते हैं।
- **1994** वे तिलगंगा नेत्र केंद्र खोलते हैं।
- **2006** उन्हें रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिलता है।
- **2012** वे लगभग 125,000 ऑपरेशन कर चुके हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी खास क्यों है

बहुत-से आविष्कारक चीज़ों को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। रुइत ने उन्हें सस्ता बनाने की कोशिश की। लेंस की कीमत 100 डॉलर से ज़्यादा से घटाकर लगभग 4 डॉलर करने से ऑपरेशन गरीबों की पहुँच में आ गया।

उन्होंने कुछ ऐसा भी बनाया जो टिके। लेंस की बिक्री और पैसे देने वाले मरीज़ मुफ्त इलाज का खर्च उठाने में मदद करते हैं, और वे दूसरे सर्जनों को भी यही करना सिखाते हैं।

हमारी राय

उन्होंने एक हुनर को इतना सस्ता बनाया कि वह उन लोगों तक पहुँचे जिन्हें उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 जो सीखें, वह सिखाइए

फ्रेड हॉलोज़ ने रुइत को एक नया तरीका सिखाया। रुइत ने फिर सैकड़ों दूसरे सर्जनों को सिखाया।

यह आजमाएँ: अपना कोई एक हुनर चुनिए और इस हफ़्ते किसी एक व्यक्ति को दिखाइए।

2 लोगों के पास जाइए

रुइत मरीज़ों के आने का इंतज़ार करने के बजाय पैदल दूर-दराज़ के क़स्बों तक गए और नेत्र शिविर लगाए।

यह आजमाएँ: किसी ऐसे एक व्यक्ति के बारे में सोचिए जो आप तक नहीं पहुँच सकता। एक बार उसके पास जाइए।

3 सबसे महँगा हिस्सा घटाइए

विदेश से आने वाला लेंस 100 डॉलर से ज़्यादा का था। उनके केंद्र ने अपना लेंस लगभग 4 डॉलर में बनाया।

यह आजमाएँ: अपने काम का सबसे महँगा हिस्सा खोजिए और पूछिए कि उसे कम में कैसे किया जाए।

4 जो दे सकते हैं, वे उनकी मदद करें जो नहीं दे सकते

मरीज़ जितना दे सकते हैं, उतना देते हैं। ग़रीब कुछ नहीं देते।

यह आजमाएँ: कोई एक तरीका खोजिए जिससे पैसे देने वाला ग्राहक किसी ऐसे व्यक्ति की मदद कर सके जो पैसे नहीं दे सकता।

हुनर की कीमत तब सबसे ज़्यादा है, जब वह ज़रूरतमंदों तक पहुँचे।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Ramon Magsaysay Award Foundation

[Ruit, Sanduk \(2006 awardee profile\)](#)

Nepali Times

[The vision thing \(editorial, 2006\)](#)

Reuters (via Fox News)

[Procedure pioneered by surgeon brings vision back to thousands \(2012\)](#)

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर एकमत हैं। छोटी बातों में फ़र्क़ है। सबसे पास का स्कूल पैदल ग्यारह दिन दूर था (मैगसेसे फ़ाउंडेशन) या एक हफ़्ते की पैदल दूरी पर (नेपाली टाइम्स), इसलिए कहानी में “कई दिन” लिखा है। लेंस की कीमत 5 डॉलर से कम (मैगसेसे फ़ाउंडेशन, 2006) और लगभग 4 डॉलर बताई गई है, जबकि आयातित लेंस 100 डॉलर से ज़्यादा का था (रॉयटर्स, 2012)। कहानी रॉयटर्स के आँकड़े लेती है और उन्हें 2012 के आँकड़े मानती है, जो अब पुराने हो सकते हैं। 125,000 ऑपरेशन रुइत की अपनी गिनती है, जो उन्होंने रॉयटर्स को बताई। मैगसेसे फ़ाउंडेशन कहता है कि उन्होंने नया तरीक़ा ऑस्ट्रेलिया में हॉलोज़ से सीखा; नेपाली टाइम्स कहता है कि 1980 के अंधेपन के सर्वे ने दोनों को पहली बार मिलाया; कहानी दोनों बातें लेती है। बेटे को पहली बार देखने वाली महिला की बात रुइत का अपना बयान है। लेंसों की गिनती लगभग 1.5 मिलियन और “निर्यात किए गए” के रूप में दी गई है, इसलिए कहानी उसे छोड़ देती है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।